



॥ श्री परिवर्तिनी (पार्श्व)
एकादशी व्रत कथा ॥
॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री परिवर्तिनी (पार्श्व) एकादशी व्रत कथा ॥

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी परिवर्तिनी एकादशी कहलाती है। इसे पार्श्व एकादशी, वामन एकादशी, जलझूलनी एकादशी तथा डोल ग्यारस के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन भगवान श्रीहरि विष्णु योगनिद्रा में अपने पार्श्व (करवट) बदलते हैं, इसलिए इसका नाम परिवर्तिनी (पार्श्व) एकादशी पड़ा है। इस एकादशी का माहात्म्य भविष्योत्तर पुराण में वर्णित है।

श्री परिवर्तिनी (पार्श्व) एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है?

उसका माहात्म्य और व्रत कथा कृपया बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह एकादशी 'परिवर्तिनी' अथवा 'पार्श्व एकादशी' कहलाती है।

इस दिन भगवान श्रीविष्णु योगनिद्रा में करवट बदलते हैं। अब इसकी

पवित्र कथा सुनो।"

सत्ययुग में राजा बलि अत्यंत पराक्रमी, दानी और विष्णुभक्त थे। उन्होंने अपने पराक्रम से तीनों लोकों पर अधिकार कर लिया। देवताओं ने अपने अधिकार खो दिए और वे अत्यंत दुःखी होकर भगवान श्रीविष्णु की शरण में पहुँचे।

भगवान विष्णु ने देवताओं की रक्षा के लिए वामन अवतार धारण किया।

वे एक तेजस्वी ब्राह्मण बालक के रूप में राजा बलि के यज्ञ में पहुँचे।

राजा बलि ने उनका सम्मान किया और कहा—

"हे ब्राह्मण देव! आप जो चाहें, मुझसे वर माँगिए।"

भगवान वामन ने कहा—

"मुझे केवल तीन पग भूमि चाहिए।"

राजा बलि मुस्कुराए और बोले—

"केवल तीन पग भूमि? मैं आपको इससे कहीं अधिक दे सकता हूँ।"
किन्तु भगवान वामन ने तीन पग भूमि का ही आग्रह किया। राजा बलि ने
संकल्प करके दान स्वीकार कर लिया।

तभी भगवान वामन ने अपना विराट त्रिविक्रम स्वरूप धारण कर लिया।
एक पग में उन्होंने समस्त पृथ्वी को, दूसरे पग में समस्त स्वर्गलोक को
नाप लिया।

फिर भगवान ने पूछा—

"हे बलि! अब तीसरा पग कहाँ रखूँ?"

राजा बलि ने विनम्र होकर अपना सिर भगवान के चरणों में प्रस्तुत कर
दिया और कहा—

"प्रभु! तीसरा चरण मेरे सिर पर रख दीजिए।"

भगवान श्रीविष्णु राजा बलि की दानशीलता, सत्यनिष्ठा और भक्ति से
अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने तीसरा चरण राजा बलि के सिर पर रखा और
उन्हें सुतल लोक का स्वामी बना दिया।

भगवान ने राजा बलि से कहा—

"हे बलि! मैं तुम्हारी भक्ति से अत्यंत प्रसन्न हूँ। चातुर्मास के समय मैं सुतल
लोक में तुम्हारे साथ निवास करूँगा। भाद्रपद शुक्ल एकादशी के दिन मैं
योगनिद्रा में अपना पार्श्व परिवर्तित करता हूँ। जो भक्त इस दिन श्रद्धा और
भक्ति से मेरा व्रत करेंगे, उन्हें महान पुण्य प्राप्त होगा।"

भगवान श्रीकृष्ण ने आगे कहा—

"हे युधिष्ठिर! जो श्रद्धा और नियमपूर्वक परिवर्तिनी (पार्श्व) एकादशी का
व्रत करता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे भगवान वामन और
श्रीहरि विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है तथा अंत में वह वैकुण्ठ धाम
को प्राप्त करता है।"

परिवर्तिनी (पार्श्व) एकादशी का महत्व

इस दिन भगवान श्रीविष्णु योगनिद्रा में करवट बदलते हैं।
यह चातुर्मास की अत्यंत महत्वपूर्ण एकादशी मानी जाती है।
भगवान वामन की विशेष पूजा का विधान है।
अनेक स्थानों पर इस दिन जलझूलनी एकादशी और डोल उत्सव भी
मनाया जाता है।
दान, जप, भजन और रात्रि-जागरण का विशेष महत्व है।

कथा का संदेश

अहंकार का त्याग और भगवान के प्रति समर्पण ही सच्ची भक्ति है।
सत्य, दान और वचनपालन मनुष्य को महान बनाते हैं।
भगवान भक्त की निष्ठा से प्रसन्न होकर उस पर अपनी विशेष कृपा
बरसाते हैं।
एकादशी व्रत आत्मशुद्धि और ईश्वर-भक्ति का श्रेष्ठ साधन है।

परिवर्तिनी (पार्श्व) एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु भाद्रपद शुक्ल पक्ष की परिवर्तिनी (पार्श्व) एकादशी का
श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु और भगवान वामन की
पूजा करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, जीवन में सुख, समृद्धि
और यश की वृद्धि होती है तथा अंत में उसे भगवान विष्णु के परम धाम
वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री परिवर्तिनी (पार्श्व) एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥